प्रेस विज्ञप्ति

DR. BASU EYE HOSPITAL
Centre To Cure Cataract And Retinal Diseases Without Operation

गुड़बाई कैटरेक्ट सर्जरी बाई आयुर्वेदिक मेड़िसन–डा0 बासु

विश्व में मोतियाबिंद का आप्रेशन ही होता है परंतु डा0 बासु आँख का अस्पताल बिना आप्रेशन मोतियाबिंद एवं रेटिना निवारण केन्द्र, बरेली में डा0 महेन्द्र सिंह बासु बिना आप्रेशन के पिछले 42 वर्षो से सफलतापूर्वक इलाज कर रहे है। यह देखने में आया है कि आप्रेशन के बाद 20 से 25 % लोगो की नजर नही आ पाती है इसका कारण है आपॅरेशन का सफल ना होना या रेटिना मे कोई खराबी होना है। और यदि ऑपरेशन बहुत अच्छा हो भी गया है तो नजर पूर्ण रूप से वापिस नही आ पाती है। इसकी मुख्य वजह रेटिना में पैथोलाजीकल कारण है। आपॅरेशन के बाद कुछ को छोड़कर 2–5 वर्षो में पुनः नजर खत्म हो जाती है जिस प्रकार से हमारे बाल सफेद हो रहे है झुरिया पड़ रही है उसी प्रकार से रेटिना का भी ड़िजैनरेशन होता है डा0 बासु द्वारा मोतियाबिंद का बिना ऑपरेशन इलाज इसलिए ज्यादा सफल है वे मोतियाबिंद को तो खत्म करते ही है साथ में रेटिना को भी पुनः रीजैनरेट कर देते है। इसलिए लम्बे समय तक मरीज की नजर बनी रहती है। मरीजो को आयुर्वेदिक दवाईयॉ दी जाती है उनका किसी भी प्रकार कोई साइड़ इफेक्ट आँखो पर नही होता है।

यह दवाई ऑखो पर कैसे कार्य करती है ?

मोतियाबिंद प्रोटीन और पानी की निश्चित मात्रा से मिलकर बनता है यदि लेंस 90–95 % पक गया है और केवल 5–10 % बचा है तो आइसोटीन आई ड्राप आदि आयुर्वेदिक दवाईयॉ लैंस की अधिक प्रोटीन को घुला देती है । प्रकृति के नियम के अनुसार हमारे शरीर की ड़ेड सैल हटते जाते है और उसके स्थान पर नये सैल्स बनते जाते है। हमारी आँख का लैंस सिलिअरी जोन्यूलस से दोनो तरफ से जुडा रहता है। इस सिलिअरी जोन्यूलस से एक निश्चित मात्रा में प्रोटीन और पानी के संयोग से लैंस को पोषण भी मिलता रहता है यही कारण है कि जैसे–2 अतिरिक्त प्रोटीन घुलती जाती है उसी अनुपात मे सिलिअरी जोन्यूलस को भी यह पोषण मिलता चला जाता है इसी लिए लैंस का आकार छोटा नही हो पाता है अगर लैंस छोटा हो जाता तो सिलिअरी जोन्यूलस से टूट कर कौचिंग हो सकती थी पर ऐसा कभी नही हुआ है।

यदि मोतियाबिंद 100 % तक गल गया है तो उसका आपॅरेशन ही एक मात्र उपाय है। डा0 बासु पिछले 42 वर्षो से सफलतापूर्वक बिना आप्रेशन के मरीजो को ठीक कर रहे है। दवा ड़ालने के 5 मिनट के पश्चात नजर पुनः वापिस आना शुरू हो जाती है और 5–6 माह इलाज करवाने पर काफी हद तक नजर पुनः वापिस आ जाती है।

बासु आई हास्पिटल के 2 वर्षो के ओवजरवेशन की एनालेसिस बी0एच0यू0 के साइंटिस्ट द्वारा किया गया तथा जिला यदि मरीज पारशियल ब्लाइंड है मतलब 2–4 फिट ही देख पाता है और चश्मा भी नही लगा पा रहा है तो 88% मरीजो की नजर पुनः वापिस आ सकती है। और 60–70% मरीजो मे चश्मा भी उतर सकता है और प्रत्येक मरीज के चश्मे के नंबर हर हाल मे कम होने लगते है।

प्रेषक

ई0प्रो0 डा0 महेन्द्र सिंह बासु
वरिष्ठ नेत्र रोग विशेषज्ञ

Address
23-B, Ekta Nagar, Stadium Road, Bareilly, U.P.-243122
Ph. No.: 7060235559, 7060245559